वर्ष :: 33 अंक : 44
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

मिथिला वर्णन

स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता
झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक
प्रकाशन का 33 वां वर्ष
/mithilavarnan
बोकारो :: रविवार, 30 जुलाई, 2023 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका
अवश्य पढ़ें-

निखिल-मंत्र-विज्ञान
14ए, मेनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

मातम में बदला त्योहार-ए-मातम

लापरवाही ने लील ली 4 जिंदगियां

- कुमार संजय -

बोकारो थर्मल : हर तरफ 'या हसन, या हुसैन' का गगनभेदी नारा गूंज रहा था। बच्चे, बूढ़े, जवान सभी ताजिया को लेकर ऊर्जा के साथ मिलन की राह पर आगे बढ़ रहे थे, लेकिन अचानक ऐसा हुआ कि सब कुछ बदल गया। बिजली के हाईटेंशन तार ने सब कुछ तार-तार कर दिया और त्योहार-ए-मातम मुहर्रम मातम में ही बदल गया। मामला बेरमो अनुमंडल के पेटरवार थाना क्षेत्र के खेतको का है, जहां लापरवाही ने चार लोगों की जिंदगियां लील ली। मुहर्रम का जुलूस उस समय मातम में बदल गया, जब जुलूस का ताजिया झारखंड सरकार के 11 केवी के हाईटेंशन तार से सट गया। तार में स्पर्श होने के साथ ही हाई वोल्टेज करंट से चार लोगों की मौत हो गई, जबकि नौ लोग गंभीर रूप से घायल हो गये। सभी घायलों का इलाज बोकारो के बीजीएच में चल रहा है। दो घायल प्राथमिक इलाज के बाद खेतको स्थित अपने घर लौट गए हैं। मृतकों में आसिफ रजा (21), एनामुल रब (35), गुलाम हुसैन (18), साजिद अंसारी (18) और सलालुद्दीन अंसारी शामिल थे। जबकि, बाकी घायलों में से इब्राहिम अंसारी, लाल मोहम्मद, फिरदौस अंसारी, मेहताब अंसारी, आरिफ अंसारी, शहबाज अंसारी, मोजोबिल अंसारी, साकिब अंसारी का इलाज बीजीएच में किया जा रहा है। घायलों में से लाल मोहम्मद एवं आरिफ रजा खेतको स्थित अपने घर लौट गये। घटना सुबह लगभग साढ़े पांच बजे की है।

खेतको में शनिवार की सुबह लगभग सवा पांच बजे मुस्लिम समुदाय के सैकड़ों युवक एवं लोग उपर मुहल्ला स्थित इमामबाड़ा से चार ताजिया लेकर खेतको-कथारा मेन रोड स्थित मंदिर के समीप मिलान को जा रहे थे। तीन ताजिया को जुलूस में शामिल लोग एवं युवा थोड़ा नीचे करके मेन रोड के किनारे से गुजरने वाले 11 केवी के झारखंड सरकार के हाइटेंशन तार के नीचे से ले गये। तार पोल से नीचे से लटक रहा था और उसके नीचे कोई तार का सेफ्टी गार्ड नहीं था। चौथा ताजिया लेकर आने वाले लोग एवं युवक ताजिये की लंबाई और लटके तार का अंदाजा नहीं लगा सके और ताजिया का ऊपरी सिरा तार के संपर्क में आ गया, जिससे जोरदार शार्ट सर्किट हुआ और ताजिया में रखी बैटरी भी ब्लास्ट कर गई। शार्ट सर्किट एवं बैटरी के ब्लास्ट होने से कई लोग एवं युवक गंभीर रूप से घायल होकर झुलस गये। घटना के बाद खेतको के ग्रामीण अपने-अपने वाहनों से सभी घायलों को डीवीसी के बोकारो थर्मल हॉस्पिटल लेकर भागे। इस हादसे के बाद खेतको में त्योहार का माहौल पूरी तरह से मातम में बदल गया।

डीवीसी हॉस्पिटल में प्राथमिक उपचार, एंबुलेंस न मिलने से हंगामा

डीवीसी हॉस्पिटल में ड्यूटी पर मौजूद डॉ. राघव रंजन ने घटना की जानकारी प्रभारी डिप्टी सीएमओ डॉ एसके झा को दी। दोनों ही डॉक्टरों ने सभी घायलों का प्राथमिक उपचार करने के बाद उन्हें आक्सीजन लगाकर बोकारो बीजीएच ले जाने को कहा। डीवीसी हॉस्पिटल से एक ओर जहां सभी मरीजों को बोकारो रेफर कर दिया गया, वहीं दूसरी ओर किसी को भी एम्बुलेंस मुहैया नहीं करवाई गई। हॉस्पिटल में एकमात्र एम्बुलेंस रहती है, जो सिर्फ डीवीसी के कामगारों को ही मुहैया कराई जाती है। अस्पताल की व्यवस्था से नाराज होकर मरीजों के परिजन एवं खेतको से पहुंचे ग्रामीणों ने हंगामा करना आरंभ किया। इसकी सूचना पाकर स्थानीय थाना के इंस्पेक्टर शैलेश कुमार चौहान पुलिस पदाधिकारियों एवं जवानों के साथ हॉस्पिटल पहुंचे। सीआईएसएफ के डिप्टी कमांडेंट बिरेन कुमार सेठी ने भी जवानों एवं अधिकारियों को हॉस्पिटल भेजा। बाद में बेरमो इंस्पेक्टर रविंद्र कुमार सिंह, पेटरवार थाना प्रभारी विनय कुमार, गांधीनगर प्रभारी अनूप सिंह, कथारा ओपी प्रभारी प्रिंस कुमार सिंह भी जवानों के साथ बेरमो एसडीपीओ सतीश चंद्र झा के निर्देश पर बीटीपीएस हॉस्पिटल पहुंचे। थाना के इंस्पेक्टर ने एम्बुलेंस नहीं मिलने पर अपने वाहन से कुछ घायल को बोकारो भेजा। बाद में अन्य निजी वाहनों से भी लोग घायलों की स्थिति को देखते हुए उन्हें लेकर बोकारो भागे। उसके बाद डीवीसी हॉस्पिटल के एम्बुलेंस से मुहैया कराई गई, जिससे सभी बाकी बचे घायलों को बोकारो भेजा गया। सात घायलों को हॉस्पिटल की ओर से आक्सीजन सपोर्ट देकर बोकारो भेजा गया। चार की मौत बोकारो ले जाने के क्रम में ही हो गई। बीजीएच में डॉक्टरों ने जांचोपरांत उन चारों को मृत घोषित कर दिया।

विभाग ने नहीं दुरुस्त कराया लटका हुआ तार

खेतको के ग्रामीणों का कहना था कि 11केवी के लटके हुए हाईटेंशन तार को ठीक करने एवं जाली लगाने को लेकर कई बार बिजली विभाग को लिखा गया, बावजूद उसे ठीक नहीं किया गया। ग्रामीणों ने कहा कि लटके हुए तार को ठीक कर दिया जाता तो शनिवार को घटित घटना नहीं घटती। घटना के दो घायल आरिफ रजा एवं लाल मोहम्मद ने कहा कि वे ताजिये के जुलूस में शामिल थे। मेन रोड आते ही अचानक से हुए शार्ट सर्किट से वे लोग घायल हो गये।

कार्यपालक अभियंता की सफाई- ग्रामीणों ने नहीं कहा था बिजली काटने

हादसे के बारे में पूछे जाने पर तेनुघाट विद्युत प्रमंडल के कार्यपालक अभियंता समीर कुमार ने अपनी सफाई दी है। इस बावत पूछे जाने पर उन्होंने घटना पर शोक और अफसोस जताया। कहा कि खेतको के ग्रामीणों ने शनिवार को ताजिया का जुलूस निकालने को लेकर बिजली काटने की सूचना नहीं दी थी, जिसके कारण बिजली नहीं काटी जा सकी। कहा कि 11 केवी का तार भी लटका हुआ नहीं है। 11केवी के उपर से 132 केवी का तार जा रहा है, जिसके कारण उक्त तार को और ऊपर नहीं किया जा सकता है।

आंखों देखी... ताजिए का पिछला हिस्सा हो गया था असंतुलित

शनिवार को खेतको में घटित घटना के चश्मदीद ऊपर मुहल्ला निवासी मो अयूब अंसारी ने बताया कि सुबह सवा पांच बजे इमामबाड़े से सभी ताजिये का जुलूस मिलान के लिए खेतको मेन रोड स्थित मंदिर के पास के लिए निकला। मेन रोड पहुंचने के समय सभी ताजिये को झुकाकर ले जाया गया, जबकि पीछे का ताजिया असंतुलित होकर 11 केवी के लटक रहे हाईटेंशन तार से सट गया और शार्ट सर्किट के कारण घटना घटी।

बोले विधायक- बिजली विभाग की लापरवाही से हुआ हादसा

हादसे पर संवेदना व्यक्त करते हुए बेरमो विधायक कुमार जयमंगल सिंह ने कहा कि बेहद अफसोसजनक घटना है। बिजली विभाग के कारण घटना घटी है। विभाग ने मृतकों को दो-दो लाख रुपया एवं घायलों को एक-एक लाख रुपया देने की घोषणा की है। कहा कि अमूमन जुलूस निकालने की सूचना बिजली विभाग को दी जाती थी, जिससे बिजली काट दी जाती थी, परंतु इस बार सूचना नहीं दी जा सकी, जिसके कारण बिजली नहीं काटा जा सका। विधायक ने कहा कि ग्रामीणों ने लटके हुए तार को भी ठीक करने की सूचना दी थी, परंतु उसे ठीक नहीं किया जा सका था। कहा कि सभी घायलों का इलाज भी बिजली विभाग, राज्य सरकार एवं जिला प्रशासन के द्वारा आगे भी करवाया जाएगा। कहा कि आपदा राहत कोष से भी सभी को 25 हजार रुपये दिये जायेंगे। साथ ही सभी को एक-एक पीएम आवास भी दिया जाएगा। बाद में विधायक खेतको पहुंचकर मृतक एवं घायलों के परिजनों से मिलकर संवेदना प्रकट की तथा सरकार की ओर से सभी को चेक सुपुर्द किये। विधायक ने सभी चेक पंचायत की मुखिया को सौंप दिया। विधायक के साथ गोमिया के पूर्व विधायक योगेंद्र महतो भी थे।

जहां लगना था मेला, वहां पसरा सन्नाटा

घटना के बाद लोगों ने क्षतिग्रस्त ताजिया को कर्बला मैदान में ले जाकर रख दिया। ताजिये के अंदर दो-तीन बैटरी को रखने के लिए स्थान बनाया गया था। एक बैटरी भी मौजूद थी। कर्बला मैदान में शाम को लगने वाले मेला में घटना के बाद सन्नाटा छा गया और मेला वाले अपना झूला एवं अन्य सामान छोड़कर चले गए।

कई जगह नहीं निकले जुलूस

खेतको की घटना के बाद बोकारो थर्मल के राजा बाजार, नूरी नगर एवं नयी बस्ती से मुहर्रम का जुलूस निकालने को स्थगित कर दिया गया। तीनों ही स्थानों से कुछ लोग ताजिया लेकर कर्बला गए। ऐसा ही निर्णय गोमिया, कथारा, खेतको आदि में भी लिया गया।

– संपादकीय –

राज्यपाल की चिन्ता विचारणीय

झारखंड में बांग्लादेशियों की बढ़ती घुसपैठ और सीमावर्ती जिलों में तेजी से बदलती डेमोग्राफी पर पहले भी सवाल खड़े होते रहे हैं। भाजपा इसे लेकर पहले से ही राज्य सरकार पर हमलावर रही है। लेकिन, इस बीच झारखंड के राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने भी इस पर गहरी चिन्ता जताकर राज्य में देशद्रोही ताकतों की बढ़ती ताकत को खतरनाक मानते हुए राज्य सरकार की कार्यशैली पर सवाल खड़े कर दिए हैं। राज्यपाल ने इस मुद्दे पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और मुख्य सचिव से भी चर्चा की है। दरअसल, राज्यपाल राधाकृष्णन ने हाल ही में कहा है कि विदेशियों की घुसपैठ से आदिवासी समुदाय की जीवनशैली बदल जाने का खतरा पैदा हो गया है। उन्होंने कहा कि दूसरे देश से आने वाले ये लोग झारखंड के आदिवासियों की पूरी जीवनशैली बदलकर रख देंगे। इसे बेहद घातक बताते हुए उन्होंने इस बात पर चिन्ता जताई कि विदेशी घुसपैठिये झारखंड में आते हैं और आदिवासी बेटियों, महिलाओं से शादी कर लेते हैं। इसे राज्य के लिए खतरनाक मानते हुए उन्होंने कहा कि आदिवासी परंपरा और विदेशियों की घुसपैठ से झारखंड की जनसांख्यिकी नहीं बदलनी चाहिए। इस मामले में उन्होंने बेहद सावधान रहने की जरूरत बताई। हालांकि, राज्यपाल के उक्त बयान के बाद झारखंड की राजनीति भी गरमा गई। सत्ता पक्ष के लोग राज्यपाल पर लगातार हमला करने लगे। जबकि, भाजपा झामुमो पर हमलावर हो गई। पूर्व मुख्यमंत्री एवं भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने झामुमो को घुसपैठियों का मददगार बताया। पूर्व मुख्यमंत्री और भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रघुवर दास ने बांग्लादेशी घुसपैठ को एटम बम से भी ज्यादा खतरनाक बताया। लेकिन, सबसे बड़ी बात यह है कि लगभग दो महीने पहले झारखंड हाई कोर्ट ने भी इस मुद्दे पर सवाल खड़े किये थे। हाई कोर्ट ने राज्य और केन्द्र सरकार से पूछा था कि बांग्लादेशी घुसपैठिए झारखंड में कैसे प्रवेश कर रहे हैं? उल्लेखनीय है कि जामताड़ा, पाकुड़, गोड्डा, साहिबगंज सहित झारखंड के सीमावर्ती इलाकों से बांग्लादेशी घुसपैठ कर रहे हैं। इन जिलों में जनसंख्या पर असर पड़ रहा है। बड़ी संख्या में मदरसे बनाए जा रहे हैं। स्थिति ऐसी हो गई है कि स्थानीय आदिवासियों को गुमराह कर उनसे शादी की जा रही है। यही कारण है कि इन जिलों की डेमोग्राफी (जनसांख्यिकी) तेजी से बदल रही है। केन्द्र और राज्य सरकार को चाहिए कि झारखंड के सीमावर्ती इलाकों में जल्द से जल्द सर्वेक्षण कराते हुए घुसपैठियों को बाहर का रास्ता दिखाया जाय। अन्यथा आने वाले दिनों में यह सही मायने में बेहद खतरनाक साबित हो सकता है। क्योंकि, रोहिंग्या मुसलमानों की घुसपैठ और उनकी बढ़ती ताकत का नतीजा मणिपुर में आज हम सब देख रहे हैं।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

मणिपुर का दर्द

-डॉ. सविता मिश्रा मागधी
बेंगलुरू, मो.- 8618093357

नौ पहाड़ियों से घिरा रत्न जड़ित नैसर्गिक घाटी को स्वर्ग माना गया।
अब उसी मणिपुर को, मादक वस्तुओं के उत्पादन का व्यापार कहा गया।

यूं देखा जाय तो हर राज्य में उथल-पुथल मची ही रहती है। भारत का कोई ऐसा राज्य नहीं, जहां दर्द का दरिया न बहता हो। हिंसा की चपेट में आकर सोलह जिलों वाला खूबसूरत राज्य मणिपुर सुलग रहा है। वह मणिपुर, जो 21 सितंबर 1949 को हुई विलय संधि के बाद से 15 अक्तूबर 1949 से भारत का अभिन्न अंग है। जिसका प्राचीन नाम 'मैत्रबाक', 'कंलैपुं' या 'पोंथोकल्प' है। यहां का राजपाट राजा बोधचंद्र 1947 से संभाल रखे थे। वही मणिपुर, जहां मछली खाने वालों को शाकाहारी माना जाता है। 30 लाख की आबादी वाले इस राज्य में मैंतेई जनजाति की आबादी कुकी से अधिक है।

कुकी समुदाय की महिलाओं पर हुए अत्याचार को लेकर मणिपुर अभी सुर्खियों में है। वायरल वीडियो ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया है। तीनों महिलाओं पर हुए अत्याचार, अशोभनीय एवं अक्षम्य है। इस अपराध को अंजाम दिया था मैतेई समुदाय के युवकों ने। वह भी अफवाह के झांसे में पड़ बड़ी सी भीड़ के साथ। वीडियो बनाने की सभी को फुरसत थी, ताकत थी, दिमाग था। किन्तु, अत्याचार के विरोध में न तो किसी के कंठ में आवाज थी, न महिलाओं को छुड़ाने की ताकत।

कुकी समुदाय की उन तीन महिलाओं का दर्द सारी दुनिया के सामने आ गया, जबकि न जाने कितनी मैतेई महिलाएं कुकियों द्वारा सामूहिक हवस का शिकार बनाई गई हैं। हाईकोर्ट द्वारा मैतेई समुदाय को एसटी का दर्जा मिलते ही कुकी जनजाति भड़क उठी। 3 मई की शाम, कांगपोकपी जिले के दोलैथाबी नामक गांव के अंदर मैतेइयों की एक छोटी-सी बस्ती 'एकोउ' को कुकियों ने घेरकर तोड़-फोड़ करते हुए आग लगा दी। स्कूल और परिवहन की बसों को भी नहीं छोड़ा था दंगाइयों ने। अपना घरबार छोड़ मैतेई बहुल दूसरे गांव पुखाओतेरापुर में भागकर जान बचाई थी लोगों ने। इस दिन की झड़प में करीब 60 लोगों के हताहत होने की खबर है। यह दर्द, यह अत्याचार विपक्ष को कभी दिखाई नहीं दिया। क्या इस दर्दनाक घटना की आवाज संसद में उन्होंने उठाई?

असल में सारा खेल अफीम की खेती और उसके व्यापार को लेकर है। मणिपुर को अफीम का स्वर्ग माना जाता है। वहां अफीम का कारोबार बहुत बड़े पैमाने पर यानी हजारों करोड़ों में होता आ रहा है। इसकी अधिक खेती होने के कारण वहां नशे ने अपना पांव इतनी तेजी से फैलाया कि उस राज्य में एचआईवी की प्रसार दर सबसे अधिक हो गई है। (प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया 2018) यही नहीं, 1997 की एक रिपोर्ट के अनुसार हेरोइन से प्रभावित होने वाला मणिपुर का चुराचांदपुर पहला जिला था।

सरकार ने इसे रोकने की कार्रवाई पर जोर दिया और अफीम की उपज को नष्ट करते हुए इसके किसानों को जंगलों से हटाकर दूसरे स्थानों पर बसाने का कार्यक्रम आरंभ किया, तभी से कुकी समुदाय कोफ्त में है। यहां लगभग साढ़े पंद्रह हजार एकड़ भूमि पर अफीम की खेती होती है। इसे रोकने से कुकी के रुतबे दिनो-दिन घटने लगे, जिसे वे सहन नहीं कर पा रहे। अपने चुनावी वादे के अनुसार वहां के मुख्यमंत्री एन. बीरेन सिंह ने अफीम की खेती पहाड़ी गांव वालों से वापस ले ली। इससे वे और अधिक नाराज हो गए। हिंसा से जूझ रहे मणिपुर में दूसरी बड़ी समस्या म्यांमार के घुसपैठियों से है।

इसी जुलाई माह में चंदेल जिले की ओर से सात सौ से अधिक रोहिंग्या बच्चों सहित मणिपुर में घुस आए हैं, जो दंगे-फसाद के साथ आर्थिक भार की भी जड़ हैं। वहां की सरकार की समस्याएं बढ़ती ही जा रही हैं। ऐसे में देश की एकता के लिए विपक्षी दलों को साथ देना चाहिए, न कि भड़काऊ भाषणबाजी कर दंगों को हवा। भारत को नशा मुक्त बनाना है तो अफीम की खेती को रोकना ही होगा।

(लेखिका वरिष्ठ समीक्षक व विचारक हैं।)

मैथिली कविता

पीड़ा

हिय केर पीड़ा आँखिक कोरे
अश्रुबूंद बनि टपकि पड़ै छै
हृदय भाव कें कागत पर ओ
व्यथा विरह केर काव्य गढै छै।।

अन्तस्थल केर ज्वार प्रबलतम
जलप्लावित क' दैछ धराकें
ताप प्रबलतर अन्तरतर केर
भस्मशात क' दैछ जरा कें।।

विरहिन मन उड़ि जाय गगन मे
विस्तृत नभमंणल दिस आतुर
ताकय मन अछि सुधापान हित
चन्द्रकिरण कें भेल क्षुधातुर।।

विरहवेदना सतत लिखै अछि
अश्रुनेत्र केर मसी बनाकें
तप्त हृदय पर अंकि आखर
प्रीत गीत हिय कन्त लगाकें।

- शंभु नाथ -

अपराध-नियंत्रण और बेहतर विधि-व्यवस्था मेरी प्राथमिकता : प्रियदर्शी

नवपदस्थापित एसपी ने संभाली कमान

बेरमो में प्रशिक्षु एएसपी के रूप में कर चुके हैं काम

उल्लेखनीय है कि बिहार के खगड़िया जिले के मूल निवासी बोकारो के नए पुलिस अधीक्षक प्रियदर्शी आलोक ने स्कूली शिक्षा सहरसा जिले से प्राप्त की और सहरसा से इंटरमीडिएट करने के बाद उन्होंने आईआईटी (बीएचयू), वाराणसी से केमिकल इंजीनियरिंग में ग्रेजुएशन किया। उसके बाद सिविल सेवा परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद उन्हें 2011 बैच में झारखंड कैडर आवंटित किया गया। भारतीय पुलिस सेवा में आने के बाद वर्ष 2013 में सबसे पहले वे बोकारो जिले के बेरमो अनुमंडल में प्रशिक्षु एएसपी रहे। प्रशिक्षण अवधि के समापन के उपरान्त उन्होंने चक्रधरपुर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी के रूप में अपना योगदान दिया। फिर स्वतंत्र प्रभार में उन्हें गढ़वा का पुलिस अधीक्षक बनाया गया। गढ़वा के बाद रामगढ़ एसपी, स्पेशल ब्रांच, फिर पुलिस अधीक्षक लोहरदगा रहे। उसके बाद वे झारखंड आर्म्ड पुलिस (जैप-3), गोविंदपुर (धनबाद) के कमांडेंट पद पर रहे और दो दिन पूर्व वह बोकारो के पुलिस अधीक्षक बनाये गए हैं।

संवाददाता
बोकारो : बोकारो के नए पुलिस अधीक्षक प्रियदर्शी आलोक ने कहा है कि जिले में अपराध नियंत्रण और विधि-व्यवस्था को दुरुस्त रखना उनकी पहली प्राथमिकता होगी। बोकारो में पुलिस अधीक्षक के पद पर अपना योगदान देने के बाद वह पहली बार पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि अपराध-नियंत्रण में सबसे महत्वपूर्ण है अपराध को रोकना और अपराध अगर हो जाता है, तो उसका त्वरित उद्भेदन करना। फिर विधि-व्यवस्था। उन्होंने कहा कि विधि-व्यवस्था को दुरुस्त बनाये रखने में कहीं कोई समझौता नहीं किया जाएगा। इसके बाद जिले में सबसे महत्वपूर्ण है अवैध खनन और संगठित अपराध पर रोक। उन्होंने कहा कि अवैध खनन से ही संगठित अपराध होते हैं। साथ ही, साइबर अपराध को रोकना भी उनकी प्राथमिकताओं में शामिल है।

उग्रवाद की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि जिले में उग्रवाद की जो गतिविधियां पहले हुआ करती थीं, पिछले दस सालों में उसमें बहुत हद तक कमी आयी है। जिस तरह से यहां के पहले के पदाधिकारियों ने प्रयास कर उग्रवाद को कम किया, हमारा पूरा प्रयास रहेगा कि हम इसे बरकरार रखें और उग्रवाद को खत्म करने का सरकार का जो लक्ष्य है, उसे हासिल करने का भरसक प्रयास करेंगे। उन्होंने महिला सुरक्षा और ट्रैफिक व्यवस्था को दुरुस्त रखना भी अपनी प्राथमिकताओं में बताया।

उन्होंने कहा कि फिर अगस्त या सितम्बर में डुमरी विधानसभा का जो उप-चुनाव होना है, वह निष्पक्ष और शांतिपूर्ण तरीके से सम्पन्न हो, यह उनका पूरा प्रयास रहेगा।

प्रोन्नति को लेकर चतुर्थवर्गीय सरकारी कर्मियों ने खोला मोर्चा

नियमों की अनदेखी कर छीना जा रहा हक : सपन

संवाददाता
बोकारो : झारखण्ड राज्य चतुर्थवर्गीय सरकारी कर्मचारी संघ की राज्य कार्यसमिति की बैठक संघ के राज्याध्यक्ष सहदेव प्रसाद कुशवाहा की अध्यक्षता में हुई। इसमें पूर्वी सिंहभूम, पश्चिमी सिंहभूम, सरायकेला-खरसावां, गिरीडीह, बोकारो, दुमका, जामताड़ा, गोड्डा, साहेबगंज, गढ़वा, लातेहार, सिमडेगा, खूंटी, रामगढ़, चतरा, कोडरमा समेत विभिन्न जिले के प्रतिनिधि सदस्यों ने ऑनलाइन मोड में भाग लिया। बैठक में प्रोन्नति सहित छह सूत्री मांगों को लेकर आंदोलन का फैसला लिया गया। बैठक को सम्बोधित करते हुए झारखण्ड राज्य चतुर्थवर्गीय सरकारी कर्मचारी संघ के प्रदेश महामंत्री साथी सपन कुमार कर्मकार ने कहा कि झारखंड निर्माण से ही मात्र वर्ग 4 का प्रमुख मुद्दा वरीयता एवं योग्यता के आधार पर पर वर्ग 4 से वर्ग 3 के पद पर प्रोन्नति लंबित है। अविभाजित बिहार मे वर्ग तीन के पदों पर वर्ग चार के कर्मियों को 25 प्रतिशत रिक्त पदों पर वरीयता एवं योग्यता के आधार पर प्रोन्नति की व्यवस्था थी, जो झारखंड में एक भी पद पर प्रोन्नति नहीं दी गई, जबकि बिहार मे अभी भी लागू है। छठा वेतन पुनरीक्षण समिति की अनुशंसा के आलोक मे मुफस्सिल मे कार्यरत कर्मियों को उत्साहित करने के उद्देश्य से अपने संवर्ग में उच्च तर रूप से प्रोन्नति की व्यवस्था प्राप्त है। इस आलोक मे झारखंड मे तृतीय वर्ग के कर्मी, विशेषकर अनुसचिवीय कर्मियों को लाभ दिया गया। वहीं, फोर्थ ग्रेड के कर्मियों को छोड़ दिया गया।

झारखंड गठन उपरांत बिहार की सेवा संहिता एवं नियमों को झारखण्ड द्वारा अंगीकृत किया गया है। फिर भी इन नियमों की अनदेखी कर राज्य के योग्यताधारी चतुर्थवर्गीय कर्मियों को अभी तक उनके देय पद प्रोन्नति से वंचित रखा गया है, जो काफी दुर्भाग्यपूर्ण है। श्री कर्मकार ने कहा कि झारखण्ड के चतर्थवर्गीय कर्मियों में क्षोभ इस बात को लेकर है कि झारखण्ड अलग हुए 22 वर्ष व्यतीत हो जाने के बावजूद एक भी चतुर्थवर्गीय कर्मी को पद प्रोन्नति की सुविधा से वंचित किये जाने से चतुर्थवर्गीय कर्मचारियों में काफी रोष व्याप्त है। इसे लेकर अब पूरे प्रदेश में जोरदार आंदोलन किया जाएगा।

कल्चरल वीक डीपीएस बोकारो में गीत-संगीत व नृत्य की विधाओं से बच्चों ने किया मंत्रमुग्ध

कला की सतरंगी छटा बिखेर गया 'तरंग'

संवाददाता
बोकारो : डीपीएस बोकारो में आयोजित चार-दिवसीय सांस्कृतिक उत्सव तरंग कला व संस्कृति की सतरंगी छटा बिखेर गया। लगातार चार दिनों तक बच्चों ने गीत, संगीत और नृत्य में अपनी कुशल प्रतिभा का परिचय दिया। चौथे व अंतिम दिन 70-80 दशक के बॉलीवुड की सतरंगी छटा उतरी रही। अंतर सदन आर्केस्ट्रा प्रतियोगिता में विभिन्न वाद्य यंत्रों पर बच्चों ने एक से बढ़कर एक सुपरहिट सदाबहार धुनें बजाकर समां बांध दिया। बेहतरीन प्रदर्शन के आधार पर रावी हाउस को प्रथम, चेनाब एवं झेलम सदन को द्वितीय तथा गंगा, यमुना और सतलज को संयुक्त रूप से तृतीय स्थान मिला। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सीआरपीएफ 26वीं बटालियन के उप समादेष्टा विनोद कुमार यादव ने बच्चों की प्रस्तुति को सराहते हुए तनाव से मुक्ति दिलाने में संगीत की अहमियत पर प्रकाश डाला।

इसके पूर्व, अंतर सदन समूह-नृत्य प्रतियोगिता में छात्र-छात्राओं ने अद्भुत नृत्य-कौशल के साथ-साथ अपनी अभिनय-कला का भी उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया। मनोरम मंच-सज्जा एवं परिदृश्य के अनुकूल बैकग्राउंड म्यूजिक के बीच बच्चों ने नृत्य के जरिए सामाजिक समस्याओं व विषमताओं के खिलाफ जन-जागरुकता का संदेश दिया। सतलज हाउस को प्रथम, झेलम को द्वितीय एवं रावी सदन को तृतीय स्थान मिला। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मुख्यालय पुलिस उपाधीक्षक मुकेश कुमार ने बच्चों की प्रस्तुतियों की भरपूर सराहना की। उन्होंने प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत प्रत्येक मुद्दे को अहम बताया और कहा कि इनके खिलाफ समय के साथ सोच बदलने की जरूरत है।

देशभक्ति थीम पर आधारित समूहगान प्रतियोगिता के दौरान 24वां कारगिल विजय दिवस भी मनाया गया। सतलज हाउस ने प्रथम, चेनाब सदन ने द्वितीय तथा गंगा सदन ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। वहीं, समूह तबला वादन एवं एकल गायन में भी बच्चों ने अपनी प्रतिभा का कुशल प्रदर्शन किया। तबला-वादन में जुमना हाउस की टीम पहले स्थान पर रही। गंगा व सतलज ने संयुक्त रूप से दूसरा तथा झेलम हाउस ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। वहीं, गजल थीम के एकल गायन में गंगा सदन की अक्षिता पाठक को पहला, झेलम हाउस की नवस्मिता मोहंती को दूसरा तथा चेनाब सदन की आयुषी राज को तीसरा स्थान मिला। विद्यालय के प्राचार्य डॉ. एएस गंगवार ने संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास में सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भागीदारी को अहम बताया। निर्णायकों में निमेष राठौर, जेपी सिन्हा, प्रियंका, अंजली कुमारी आदि शामिल रहीं।

बीजीएच में अब थेरेपी मॉड्यूल और ईजीजी के साथ कम्प्यूटरीकृत स्पीच एनालाइजर की सुविधा

बोकारो : मरीजों की बेहतर देखभाल और उपचार में सतत उन्नयन के क्रम में बोकारो स्टील प्लांट द्वारा संचालित बोकारो जनरल हॉस्पिटल (बीजीएच) के ईएनटी (नाक, कान, गला) विभाग में स्पीच एंड हियरिंग थेरेपी मॉड्यूल और इलेक्ट्रोग्लोटोग्राफी (ईजीजी) के साथ एक कम्प्यूटरीकृत स्पीच एनालाइजर मशीन स्थापित किया गया है। इस उपकरण का उद्घाटन बीजीएच के मुख्य चिकित्सा अधिकारी (सीएमओ) डॉ. बीबी करुणमय ने अस्पताल के वरिष्ठ चिकित्सकों की उपस्थिति में किया। थेरेपी मॉड्यूल और ईजीजी के साथ कम्प्यूटरीकृत स्पीच एनालाइजर एक ऐसा उपकरण है, जो विभिन्न प्रकार के आवाज संबंधित विकारों के निदान में मदद करता है। इलेक्ट्रोग्लोटोग्राफी (इजीजी विश्लेषण) वॉइस प्रोडक्शन के दौरान वोकल कॉर्ड संपर्क के बारे में जानकारी देता है। यह वोकल कॉर्ड के मूवमेंट के बारे में भी पूरी जानकारी देता है, जिससे आवाज संबंधी विकारों के इलाज में मदद मिलती है। उपकरण के साथ जुड़े अन्य सॉफ्टवेयर डिलेड स्पीच यानी बोलने में विलंब और संबंधित समस्याओं के इलाज में सहायक होगी। कुछ मरीज ऐसे होते हैं, जिनके सुनने की क्षमता और आई क्यू सामान्य होने पर भी बोलने में असमर्थ होते हैं। ऐसे मरीजों के इलाज के लिए स्पीच और लैंग्वेज थेरेपी दी जाती है। इन नए उपकरणों के लगने से बीजीएच में आवाज संबंधी विकार वाले मरीजों के इलाज में मदद मिलेगी।

NOTICE

WHEREAS it is stated that Smt. Bina Sinha, W/o Late Bimal Kumar, Ex-Staff No. 308454 has applied for regularization of Qr No. 1004 in Sector- 4/C, B. S. City, pursuant to death of Bimal Kumar, the original Lessee, upon obtaining "No Objection" Certificate from co-sharers as per Family Tree dated 22.07.2023 issued by Circle Officer.

If any person or persons have any objection to such regularization, he/she shall file the same before DGM (TA-L&E)/ Estate Affairs, Bokaro Steel Plant, Town Administration Department , Nagar Seva Bhawan, Sector- 3, Bokaro Steel City, within 30 days of publication, failing which the application for regularization shall be pursued as per rules.

बच्चों का समग्र विकास ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का ध्येय : सिंह

संवाददाता
बोकारो : नगर के केन्द्रीय विद्यालय- 1 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की तृतीय वर्षगांठ का आयोजन रंगारंग कार्यक्रमों के साथ किया गया। केन्द्र सरकार की शिक्षा क्षेत्र में महत्वाकांक्षी योजना के अंतर्गत केन्द्रीय विद्यालय संगठन रांची संभाग के उपायुक्त डीवाई पटेल के निर्देशानुसार आयोजित इस कार्यक्रम में विद्यालय के प्रभारी प्राचार्य भवेश चन्द्र सिंह ने इस महत्वाकांक्षी नीति को पूर्ण मनोयोग से जन-जन तक पहुंचाने को लेकर अपनी कटिबद्धता जताई। इस दौरान श्री सिंह ने जिले के विभिन्न विद्यालयों से आए प्राचार्यों, शिक्षाविदों, शिक्षकों, अभिभावकों तथा छात्रों की उपस्थिति के बीच राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की खूबियों का विस्तृत शब्दचित्र प्रस्तुत किया।

श्री सिंह ने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य बहुविषयात्मकता और समग्र शिक्षा है। इस शिक्षा नीति में अपनी मातृभाषा के माध्यम से सीखने पर जोर दिया गया है। इस शिक्षा नीति में भाषा को माध्यम के रूप में अपनाने की बात कही गई है। कठोर पाठ्यक्रम, परीक्षा के लिए अधिगम, आकलन के लिए योगात्मक तरीकों को अपनाना आदि को इस शिक्षा नीति में दरकिनार कर दिया गया है। वस्तुतः यह शिक्षा नीति छात्र-केंद्रित शिक्षा पर जोर देती है। उन्होंने कहा कि बाल वाटिका की अवधारणा इस शिक्षा नीति की एक उल्लेखनीय विशेषता है।

विद्यालय में प्रवेश से पूर्व प्राथमिक स्तर का यह खेल आधारित एक शिक्षण कार्यक्रम है। देशभर में 450 से अधिक केंद्रीय विद्यालयों में बाल वाटिका सफलतापूर्वक संचालित की जा रही है। उन्होंने कहा कि यह ऐसा मिशन है, जिसका उद्देश्य 8 साल तक के बच्चों का समग्र विकास करना है।

प्रख्यात शिक्षाविद यू. जयकुमार ने बताया कि नई शिक्षा नीति की एक मौलिक विशेषता तंत्र विद्या से हटाकर बच्चों को मौलिक ज्ञान की ओर प्रेरित करना है। पुनः व्यावसायिक शिक्षा की ओर अभिप्रेरित करके उन्हें रोजगार हेतु प्रेरित करना भी इस शिक्षा का एक मौलिक उद्देश्य है। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय की आंग्ल भाषा शिक्षिका अनुला मुखर्जी ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में विद्यालय के शिक्षक सत्येंद्र शरत, पुस्तकालय अध्यक्ष सत्यव्रत कुमार, विज्ञान संकाय के शिक्षक आरके झा, उमा शंकर प्रजापति, संजीव कुमार, वाणिज्य विभाग के अरविंद कुमार, कला संकाय के वीएसके में अभय कुमार, संतोष कुमार पाण्डेय, जया कुमारी, सोनाली शर्मा, नीतू कुमारी, निभा कुमारी आदि शिक्षकों ने अपनी महती भूमिका निभाई।

बेरमो को जिला बनाने की मांग को विधायक ने खोला मोर्चा

संवाददाता
बोकारो : आजसू पार्टी के विधायक डॉ. लंबोदर महतो ने बेरमो को जिला बनाने की मांग को लेकर मोर्चा खोल दिया है। झारखंड विधानसभा के मॉनसून सत्र के पहले ही दिन सदन परिसर में वह धरने पर बैठ गए। उन्होंने कहा कि इस विषय को वह कई मौके पर सदन में व सदन के बाहर उठा चुके हैं। यह मांग लोग लंबे समय से कर रहे हैं। इस विषय को लेकर कई लोग बेरमो जिला बनाओ संघर्ष समिति के बैनर तले गत 26 जुलाई से बेरमो अनुमंडल मुख्यालय तेनुघाट से पदयात्रा प्रारंभ कर चुके हैं। पदयात्रा कर रहे लोग मुख्यमंत्री आवास आकर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से मिलकर अपनी मांग को रखेंगे। डॉ. लंबोदर ने कहा कि बेरमो अनुमंडल (मुख्यालय तेनुघाट) राज्य का सबसे पुराना अनुमंडल है। वर्ष 1971 में गिरिडीह से अलग होकर बेरमो अनुमंडल के रूप में अस्तित्व में आया।

बेरमो अनुमंडल हर दृष्टिकोण से जिला बनने की सभी अर्हता रखता है। इस अनुमंडल में 07 प्रखंड, 15 थाना 06 ओपी एवं व्यवहार न्यायालय भी है। इसकी कुल आबादी 2011 के जनगणना के अनुसार करीब 11 लाख 08 हजार 735 है। उन्होंने कहा कि इससे कम जनसंख्या तथा प्रखंड वाले अनुमंडल भी जिला बन चुके हैं, किंतु बेरमो अनुमंडल के जिला नहीं बनने से लाखों व्यक्तियों को प्रशासनिक, राजस्व व विकास संबंधी कार्यों में काफी कठिनाइयों का सामना कर रहा है।

कटिबद्धता चंद्रपुरा में राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम के तहत जागरूकता शिविर आयोजित

क्षयरोग उन्मूलन को डीवीसी सजग : पांडेय

संवाददाता
चंद्रपुरा : दामोदर घाटी निगम, चंद्रपुरा ताप विद्युत केंद्र के निगमित सामाजिक दायित्व विभाग, शहीद तिलकामांझी मेमोरियल अस्पताल और जिला यक्ष्मा विभाग द्वारा डीवीसी अस्पताल में शुक्रवार को राष्ट्रीय क्षय रोग उन्मूलन कार्यक्रम के तहत टी बी के लिए संवेदनशीलता, जागरूकता एवं जांच शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अपने संबोधन में वरिष्ठ महाप्रबंधक एवं परियोजना प्रधान सुनील कुमार पांडेय ने कहा कि क्षय रोग के उन्मूलन के लिए डीवीसी प्रबंधन सजग है। लोगों में जागरूकता फैलाने और क्षय रोग से निराकरण के लिए हर संभव प्रयास किया जाएगा। इसके लिए शुरुआती दौर में लक्षण दिखाई देने पर जांच कराना आवश्यक है, ताकि सही समय पर इस बीमारी का इलाज हो और लोगों को ऐसी बीमारी से मुक्ति मिले।

उन्होंने कहा कि प्लांट के अलावा इस क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्रों में भी इसकी जांच होनी चाहिए, ताकि बीमारी से लोग मुक्त होकर उत्तम जीवन जी सकें। समारोह को डॉ के पी सिंह, डॉ परमवीर कुमार, डॉ लक्ष्मण सोरेन, डॉ ए तिग्गा, डॉ एके श्रीवास्तव, डॉ हेमंत कुमार झा, डॉ एके झा, अनुपमा आदि ने भी संबोधित किया। समारोह में उप महाप्रबंधक (प्रशासन) टीटी दास, वरीय प्रबंधक दिलीप कुमार, डॉ एस हेंब्रम आदि उपस्थित थे। समारोह का संचालन बसंत कुमार महापात्र ने किया। समारोह में अतिथियों को गुलदस्ता देकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम से पूर्व वरिष्ठ महाप्रबंधक और परियोजना प्रधान श्री पांडेय सहित अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर शिविर का उद्घाटन किया।

हफ्ते की हलचल

चास रोटरी ने अमृत पार्क में लगाए औषधीय पौधे

बोकारो : रोटरी क्लब चास द्वारा चलाए जा रहे वृक्षारोपण अभियान के तहत अमृत पार्क -5 में औषधीय पौधों का रोपण किया गया। चास रोटरी की अध्यक्ष पूजा बैद ने कहा कि वृक्ष मनुष्य को तो जीवन देते ही हैं, साथ ही साथ पशु पक्षी, जीव जंतुओं को भी आश्रय एवं जीवन देते हैं। पूजा ने कहा कि धरती आने वाली अगली पीढ़ियों के योग्य बनी रहे, इसलिए वृक्षारोपण आवश्यक है। पूर्व अध्यक्ष नरेंद्र सिंह ने कहा कि रोटरी द्वारा बोकारो में हरित आवरण को बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं, जिससे प्रदूषण नियंत्रण में मदद मिलेगी। संस्थापक अध्यक्ष संजय बैद ने कहा कि मानव जीवन के लिए वृक्ष का अत्यंत महत्व है और पर्यावरण संतुलन के लिए हमें निरंतर पौधारोपण करते रहना होगा। चास रोटरी की सचिव डिंपल कौर ने जानकारी देते हुए कहा कि चास रोटरी द्वारा अभियान चलाकर वृक्षारोपण किया जा रहा है। डिंपल ने कहा कि रोटरी केवल वृक्षारोपण ही नहीं, बल्कि पौधारोपण के उपरांत पौधों की सुरक्षा एवं सिंचाई की भी उचित व्यवस्था कर रही है। कार्यक्रम को सफल बनाने में कुमार अमरदीप, मंजीत सिंह, बिनोद चोपड़ा, विपिन अग्रवाल, माधुरी सिंह, शैल रस्तोगी, उषा कुमार, पूनम अग्रवाल, रंजना सिंह आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

डीपीएस चास में सदनोत्सव आविर्भाव का समापन

बोकारो : डीपीएस चास में तीनदिवसीय सदनोत्सव 'आविर्भाव' देशभक्ति गीतों पर नृत्य प्रस्तुति के साथ संपन्न हो गया। इस अवसर पर मुख्य रूप से सुरेश अग्रवाल (सचिव-डीएस मेमोरियल सोसायटी चास), कार्यवाहक प्राचार्या दीपाली भुस्कुटे, विद्यालय के डीन जोस थॉमस, पुष्प सनशाइन स्कूल चास की निदेशक पुष्पा अग्रवाल सहित सभी शिक्षक व सैकड़ों विद्यार्थी उपस्थित थे। बेहतर प्रदर्शन के आधार पर यमुना सदन को प्रथम, गंगा को द्वितीय, चेनाब सदन को तृतीय व सतलज सदन को चौथा स्थान प्राप्त हुआ। निर्णायकों में विमल कुमार पात्रा (विभागाध्यक्ष नृत्य-जीजीपीएस चास), मधुमिता भौमिक (नृत्य विशेषज्ञ) व चंद्रिमा रे (नृत्य विशेषज्ञ संत-जेवियर स्कूल, बोकारो) थे। डीपीएस चास की चीफ मेंटर डॉ. हेमलता एस मोहन ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम मन और शरीर की समग्र साधना की दिशा में हमारे प्रयास को प्रतिबिंबित करते हैं। इसके पूर्व, नृत्य-संगीत में बच्चों ने खूब समां बांधा।

अंतर सदन बास्केटबॉल प्रतियोगिता में जल सदन बना विजेता

बोकारो : चिन्मय विद्यालय के क्रीड़ा प्रांगण में अंतर सदन बास्केटबॉल प्रतियोगिता आयोजित की गई। जल सदन ने वायु सदन को 19 के मुकाबले 11 से अंकों से हराया और फाइनल जीता। इससे पूर्व खेले गए मैच में जल सदन ने पृथ्वी सदन को 16- 09 से एवं वायु सदन ने अग्नि सदन को 19- 11 से हराकर फाइनल में जगह बनाई। फाइनल मैच प्रारंभ होने के पूर्व विद्यालय के प्राचार्य सूरज शर्मा ने जल सदन एवं वायु सदन के खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया एवं दोनों टीमों को शुभकामनाएं दी। सदन के खिलाड़ियों में खवास, यशस्वी एवं कृष्णा ने शानदार तालमेल एवं तकनीक का परिचय देते हुए अपनी टीम को जीत दिलाई। वायु के खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया। जल सदन के यशस्वी को उसके शानदार प्रदर्शन के लिए उसे मैन ऑफ द टूर्नामेंट एवं बालिका वर्ग में कृतिका को बेस्ट प्लेयर घोषित किया गया। इस मैच में संजीव सिंह, प्रांजल सैकिया, प्रत्यूष सिंह, ललिता, अमर कुमार ने निर्णायक की भूमिका निभाई। इस दौरान वरीय शिक्षक हरिहर पांडेय, निशांत सिंह, देवदीप चक्रवर्ती, रणविजय ओझा, प्रवीण कुमार एवं नितेश पांडेय ने खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाया।

भाकपा माले ने मनाया चारु मजूमदार का शहादत दिवस

गोमिया : भाकपा माले गोमिया प्रखंड कमेटी ने ललपनिया मजदूर मैदान में पार्टी के संस्थापक महासचिव चारू मजूमदार का 51वां शहादत दिवस मनाया गया। वरिष्ठ नेता उमेश राम ने कहा कि आज की परिस्थिति में भी चारू मजूमदार का शहादत दिवस हमें याद दिलाता है कि संविधान और लोकतंत्र की रक्षा के लिए संघर्ष तेज करने की जरूरत है। कार्यक्रम को भाकपा माले के प्रखंड सचिव सुरेन्द्र प्रसाद यादव ने भी संबोधित किया। उन्होंने मणिपुर की घटना को लोकतंत्र और संविधान पर हमला बताया। मौके पर भोला सिंह, रामू यादव, रामजी मुर्मू, प्रदीप केवट, दिलीप कुमार यादव, हकीमुदीन अंसारी, रूपेश यादव, बिगन यादव, अक्षय यादव, रंजीत कुमार पटेल, ईश्वर हेम्बरम, संजय महतो, अर्जुन महतो, हुकूमनाथ महतो, योगेन्द्र महतो, शूकर महतो, धीरज महतो, लालदेव मांझी, महेंद्र हांसदा, लालाजी चौडे, लतीफ अंसारी, नवीन नायक, विजय पांडेय आदि मौजूद रहे।

राजनीति-पोषित अपराधियों का खुला तांडव

अपराधी, पुलिस और राजनीतिक गठजोड़ का नतीजा है हत्या, लूट और रंगदारी

देवेन्द्र शर्मा

रांची : राजनीतिक संरक्षण और पुलिस की कथित मिलीभगत से प्रदेश में आर्थिक अपराध के साथ-साथ हत्या, लूट, रंगदारी की घटना में बेतहाशा वृद्धि हो गई है। पूरे प्रदेश में रोज दस से पन्द्रह हत्या की खबरें सामने आ रही हैं। वहीं, लूट, डकैती, छिनतई के साथ-साथ संगठित अपराध की घटना रिकॉर्ड की जा रही है। सरकार इस बात को लेकर चिंतित है कि जब-जब क्राइम कंट्रोल को लेकर बैठक या समीक्षा बैठक की जाती है, ठीक दूसरे दिन अपराध की बड़ी घटना हो जाती है। सरकार की चेतावनी का अपराधियों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा। घटना के बाद पुलिस अधिकारियों का पदस्थापन और स्थानान्तरण तो होता है, पर अपराधकर्मियों का सफाया या अपराध पर अंकुश नहीं लग रहा। कुछ रोज पहले मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने प्रदेश में बढ़ते अपराध और विधि-व्यवस्था को लेकर आपात बैठक की थी। उन्होंने इस बात पर नाराजगी जताई थी कि जब पुलिस को क्राइम कंट्रोल की खुली छूट दी गई है, तब घटना में बढ़ोत्तरी क्यों हो रही है? उन्होंने प्रदेश के डीजीपी की जमकर खिंचाई की थी। पुलिस मुख्यालय ने सभी अधिकारी समेत थाना को अलर्ट संदेश दिया था। इस मुस्तैदी अलर्ट के 12 घंटे बाद ही राजधानी के नगड़ी थाना क्षेत्र में वामपंथी नेता व मांडर विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी सुभाष मुंडा की हत्या अपराधियों ने उनके कार्यालय में घुसकर कर दी। अपराधियों ने सुभाष मुंडा को आठ गोली मारी। घटनास्थल पर ही मुंडा ने दम तोड़ दिया। मुंडा जमीन कारोबार से जुड़े थे।

राजधानी समेत प्रदेश के किसी भी जिले में अपराधियों के बीच पुलिस का खौफ नजर नहीं आता है। राजधानी रांची में रोज दो-तीन हत्याएं हो रही हैं। जमीन कारोबारी, बिल्डर, बड़े व्यवसाय करने वालों को मोबाइल से रंगदारी की बात आम हो गई है। पिछले दिनों बिरसा मुंडा केन्द्रीय कारागृह में बंद कुख्यात अपराध कर्मी द्वारा मोबाइल के प्रयोग पर जोरदार हंगामा मचाया गया था। अमन साहू, अखिलेश सिंह, सुजीत सिन्हा, अमन श्रीवास्तव, विकास तिवारी, संदीप थापा, बिट्टू मिश्रा, लव कुश शर्मा सभी के सभी जेल में बन्द हैं। इनके नाम पर करोड़ों की रंगदारी प्रतिमाह उनके गुर्गे उठा रहे हैं। लगभग सभी अपराधियों के पास अत्याधुनिक हथियार उपलब्ध हैं। घटना में इनका प्रयोग भी खुलकर किया जा रहा है। सूचना तंत्र की रिपोर्ट यदि सत्य मानी जाय तो सभी बड़े गैंगस्टरों का सम्बन्ध बड़े-बड़े पुलिस अधिकारियों से बताया जाता है। सूबे में गैंगवार की घटना में भी लगातार वृद्धि हुई है।

हर घटना के बाद सरकार के निर्देश पर पुलिस अधिकारियों में तथाकथित सजगता और कर्तव्यनिष्ठा का भाव जागृत होता है। अधिकारी रात-रात भर जगकर ड्यूटी में लग जाते हैं और एक समय के अन्तराल के बाद फिर यथावत हालात बन जाते हैं। राजधानी रांची की बात करें, तो यहां कब किसकी हत्या, लूट या डकैती की घटना हो जाय, कहना कठिन है। झारखंड में आर्थिक अपराध की घटनाएं सरकार के लिए चिन्ता का विषय बनी हैं। सरकार के दो-दो आईएएस अधिकारी जेल में बन्द हैं। इनके साथ दर्जन भर बड़े अधिकारी भी जेल में हैं। प्रदेश की खनिज संपदा की लूट हो रही है। पुलिस और गैंगस्टर को भेंट चढ़ाकर खनिज माफिया करोड़ों हजम कर रहे हैं। केन्द्रीय जांच एजेंसी की छापेमारी में करोड़ो की राशि पकड़े जाने के बाद भी इसका अंत होता नहीं दिख रहा। प्रदेश में बिल्डरों और जमीन माफियाओं के चौंकाने वाले खेल सामने आ रहे हैं। जनप्रतिनिधि, ब्यूरोक्रैट और माफिया की काली कमाई जमीन कारोबारी और बिल्डर्स अपने धंधे में खुलकर लगा रहे हैं। इससे इनकी काली करतूत को संरक्षण भी मिल रहा है।

सूत्रों की मानें तो लगभग एक दर्जन बड़े ब्यूरोक्रैट और आधा दर्जन भर राजनेता की काली कमाई इस धंधे में लगी हुई है। कुल मिलाकर झारखंड में अपराधी, राजनेता और शीर्ष पुलिस अधिकारियों की मिलीभगत का खेल अपराध को पुष्पित-पल्लवित कर रहा है।

पुलिस के हथियार से अंजाम दे रहे वारदात?

झारखंड के अपराधी आपराधिक वारदातों को पुलिस के हथियार से ही अंजाम दे रहे हैं? यह खबर कुछ समय से प्रदेश में चर्चा का विषय बनी है। इस बात को तब और बल मिल गया था जब पिछले दिनों ईडी ने राजधानी रांची में एक आर्थिक अपराधी के घर छापेमारी में दो एके- 47 को बरामद किया था। मुख्यमंत्री की सुरक्षा चौकसी में लगे दो पुलिस के जवानों के ये हथियार बताये गये थे। हथियार उक्त अभियुक्त के पास कैसे पहुंचा, यह एक रहस्य बना हुआ है। जांच चल रही है, आगे भी जारी रहेगी।

कजरी नृत्य और सावनी फुहार के साथ साहित्य सम्मेलन में मना आनंदोत्सव

संवाददाता

पटना : कजरी नृत्य और पावस की फुहार के साथ बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन आनंद की गंगा में डुबकी लगा रहा था। अध्यक्ष अनिल सुलभ समेत सम्मेलन के सभी अधिकारी और सदस्यगण एक दूसरे को बधाइयां देते हुए, बधाइयां स्वीकार करते हुए अपनी प्रसन्नता की अभिव्यक्ति कर रहे थे। विगत 6-7 मई को आयोजित हुए सम्मेलन के 42वें महाधिवेशन की अपार सफलता और राष्ट्रीय-स्तर पर हो रही व्यापक चर्चा के उपलक्ष्य में आनंदोत्सव-सह-सम्मान-समारोह का आयोजन किया गया था।

समारोह के उद्घाटनकर्ता और पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. सीपी ठाकुर, दूरदर्शन बिहार के कार्यक्रम-प्रमुख डॉ राज कुमार नाहर, दीपक ठाकुर तथा सम्मेलन अध्यक्ष ने गत अधिवेशन में मूल्यवान योगदान देने वाले सम्मेलन की कार्यसमिति और महाधिवेशन की स्वागत समिति के अधिकारियों और सदस्यों को 'सम्मेलन कौस्तुभ मणि', 'सम्मेलन-शिरोमणि', 'सम्मेलन चूड़ामणि', 'सम्मेलन पद्म-पराग' तथा 'सम्मेलन-रत्न' की उपाधियों से विभूषित किया। सम्मेलन-कर्मी भी सम्मेलन-सेवी सम्मान से अलंकृत किए गए। इन्हें हैदराबाद से विशेष रूप से मंगाए गए वंदन-वस्त्र और अलंकृत प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

सम्मेलन की कला-समिति और सांस्कृतिक संस्था 'प्रांगण' के संयुक्त तत्वावधान में 'कजरी-नृत्य' की प्रस्तुतियों से आरंभ हुए इस उत्सव में एक भव्य कवि-सम्मेलन भी संपन्न हुआ, जिसमें 50 से अधिक कवियों और कवयित्रियों ने अपनी रचनाओं का सुमधुर पाठ किया। सोमा चक्रवर्ती के नृत्य-संयोजन और निर्देशन में कुमारी पूजा, निधि राय, रितिका चक्रवर्ती, रिया चक्रवर्ती, अनु कुमारी, काजल कुमारी, कृति कुमारी, मीनाक्षी मधुश्री, हनी सिंह, मिक्की कुमारी, आरती बरनवाल, मीरा कुमारी, अंजना रंजन, सिद्धिका ध्रुवा, आद्याश्री, ओम प्रकाश, तथा अतीश कुमार आदि ने झूमर, कजरी और मुखौटा-नृत्य की अत्यंत मोहक प्रस्तुतियां दीं। इन्हें सम्मेलन के अध्यक्ष अनिल सुलभ ने 'कला-रत्न' की उपाधि से विभूषित किया। मंच का संचालन कवि ब्रह्मानन्द पांडेय ने किया।

सद्भावना पर फिर आई आंच, पर प्रशासन ने संभाले हालात

विशेष संवाददाता

मिथिला डायरी

दरभंगा : दरभंगा जिले में एक बार फिर सांप्रदायिक सद्भाव खतरे में दिखा। अमन-चैन के दुश्मन लोगों ने दो समुदायों के बीच विभेद उत्पन्न करने और भिड़ंत कराने की कोई कसर नहीं छोड़ी, परंतु समय रहते प्रशासन ने हालात संभाल लिए। बिहार सरकार ने दरभंगा में इंटरनेट सेवा बंद कर दी। सोशल मीडिया पर फैलने वाली अफवाहों को नियंत्रित करने के लिहाज से यह फैसला लिया गया। जिला दंडाधिकारी राजीव रौशन का कहना है कि जिले में हाल में कुछ घटनाएं हुई हैं, जिसको लेकर कुछ स्वघोषित पत्रकारों ने गैर-जिम्मेदाराना पूर्ण व्यवहार करते हुए आधारहीन व अपुष्ट खबरें प्रसारित कीं। इनमें से कुछ को नोटिस भेजा गया है, लेकिन ऐसे बहुत सारे लोग हैं, इसलिए एहतियातन इंटरनेट सेवा प्रतिबंधित करने का निर्णय लिया गया। इस संबंध में 27 जुलाई को बिहार सरकार के गृह विभाग के स्पेशल ब्रांच की तरफ से आदेश जारी किया गया। उसमें उपलब्ध इनपुट्स और जिला मजिस्ट्रेट तथा वरिष्ठ पुलिस सुपरिंटेंडेंट की तरफ से मिली रिपोर्ट का हवाला देते हुए जिले के कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा अफवाह को बढ़ावा देने के लिए आपत्तिजनक सामग्री को फैलाने में इंटरनेट माध्यमों का इस्तेमाल करने की बात कही गई। उक्त आदेश में इंटरनेट सेवा प्रदाता कंपनियों से दो दर्जन सोशल मीडिया माध्यम व चैटिंग ऐप्स के जरिए जिले में मैसेज के आदान-प्रदान पर प्रतिबंध लगाने को कहा गया है। इनमें फेसबुक से लेकर, वाट्सएप, वीचैट, गूगल प्लस, लाइन, स्नैपचैट, यूट्यूब (अपलोडिंग) आदि शामिल हैं। दरभंगा में सांप्रदायिक तनाव की कड़ी 22 जुलाई को बाजार समिति स्थित दुर्गा मंदिर के पास धार्मिक झंडा लगाने के बाद शुरू हो गई थी। दो समुदायों में जमकर पथराव किया गया। इसके अगले ही दिन जिले की हरिहरपुर पूर्वी पंचायत क्षेत्र में पासवान समुदाय व मुस्लिम समुदाय के बीच झड़प हो गई। झड़प की वजह शव का अंतिम संस्कार था। बताया जाता है कि मलपट्टी गांव और धरमपुर गांव की सीमा पर वर्षों पुराना एक श्मशान है, जहां हिन्दू समुदाय के लोग शवों का अंतिम संस्कार करते हैं। पासवान समुदाय से ताल्लुक रखने वाले एक व्यक्ति की 23 जुलाई की शाम मृत्यु हो गई थी, तो उसके शव के अंतिम संस्कार के लिए लोग श्मशान पहुंचे। श्मशान से सटा हुआ एक गड्ढा था, जिसमें कुछ महीने पहले ही मिट्टी भरी गई थी। एक स्थानीय मुस्लिम परिवार का दावा है कि उक्त जमीन उनकी है, लेकिन स्थानीय हिन्दुओं के अनुसार वह श्मशान की जमीन है। शव का अंतिम संस्कार इसी जमीन पर किया जाना तय हुआ था, जिसका मुस्लिम परिवार ने विरोध किया। यही बात विवाद में तब्दील हो गई। वहां बवाल हो गया और दोनों तरफ से जमकर पथराव किये गये। कुछ वाहनों व घरों में तोड़फोड़ की भी खबरें हैं। दरभंगा जिले के कमतौल थाना क्षेत्र के बरिऔल में भी दो पक्षों में टकराव हुआ। सूत्रों के अनुसार बरिऔल में एक मंदिर में भजन चल रहा था और उसी वक्त मंदिर के पास से होकर मोहर्रम की एक रस्म के लिए मुस्लिम समुदाय मिट्टी ले जा रहा था, जिसको लेकर दोनों पक्षों में विवाद हो गया। घटना की खबर मिलते ही स्थानीय पुलिस पहुंची और स्थिति को काबू में किया।

प्रेमचंद जयंती के उपलक्ष्य में साहित्यिक परिचर्चा व कवि सम्मेलन

पुपरी : उपन्यास सम्राट प्रेमचंद जयंती के उपलक्ष्य में प्रेमचंद साहित्य पर परिचर्चा एवं कवि सम्मेलन का आयोजन सिंगिया रोड स्थित यूनिक एकेडमिक के सभागार में युवा कवि राहुल चौधरी के सौजन्य से वरिष्ठ कथाकार रामबाबू नीरव की अध्यक्षता में आयोजित की गयी। मंच संचालन युवा कवि गौतम कुमार वात्स्यायन ने किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सीतामढ़ी के वरीय कवि सुरेश वर्मा तथा विशिष्ट अतिथि जनकपुर धाम (नेपाल) के वरिष्ठ साहित्यकार महेश्वर राय तथा जलेश्वर नेपाल के युवा साहित्यकार अजय कुमार झा थे। प्रथम सत्र में शिक्षक प्रमोद कुमार सिंह ने कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की कृतियों पर विद्वतापूर्वक प्रकाश डाला। प्रेमचंद साहित्य तथा उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कथाकार रामबाबू नीरव ने कहा कि प्रेमचंद जी का साहित्य इसलिए अमर है, क्योंकि उन्होंने हिन्दी साहित्य को आम आदमी की त्रासदी, शोषण, भूख, बेबसी तथा राष्ट्रीयता की भावना से जोड़ा। दूसरे सत्र में ईशान गुप्ता, संजय चौधरी, प्रकाश मोहन, पं. धीरेन्द्र झा, यू एस करुणाकर, स्वतंत्र शांडिल्य, रामबाबू सिंह, काजल चौधरी, राहुल चौधरी आदि ने अपनी काव्य कृतिया प्रस्तुत कीं।

अपनी प्रकृति को श्रेष्ठ प्रवृत्ति की दिशा में करें परिवर्तित

- गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली-

आजकल आप सभी प्रकृति की लीला के संबंध में नित्य विचार करते हैं। यह क्या हो रहा है, प्रकृति इतनी विचित्र क्रुद्ध क्यों है? अप्रैल-मई के महीने में भयंकर आंधी, तूफान, वर्षा, कभी मौसम का एकदम गर्म हो जाना और कभी एकदम ठंडा हो जाना बड़ा ही विचित्र लग रहा है। आप सोचते होंगे कि यह सब क्या हो रहा है? प्रकृति ऐसा कैसे कर सकती है? ईश्वर के नियम के अनुसार शीत ऋतु, बसंत ऋतु, ग्रीष्म ऋतु, वर्षा ऋतु नियम से चलनी चाहिए। क्यों प्रकृति में इतनी अधिक उथल-पुथल हो रही है?

प्रकृति अर्थात शक्ति!

ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका,
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोस्तुते।।

'यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे...'

देखो, यह प्रकृति का विचलन कोई नवीन घटना नहीं है। इस प्रकार कालचक्र में हजारों बार ऐसा हुआ है और आगे भी हजारों बार ऐसा होगा। प्रकृति के विचलन को और उसके स्वभाव को रोकने की क्षमता मनुष्य में नहीं है। उसे ही प्रकृति के अनुसार चलना पड़ता है। अपने आप को प्रकृति के अनुरूप ढालना पड़ता है। ठीक ऐसे ही, जब आप बुखार आने पर दवाई लेते हैं। ... और आपने तो दो साल पहले प्रकृति की भयंकर विभीषिका देखी है- कोरोना के रूप में। उससे आप लड़े नहीं, अपितु आपने अपनी सुरक्षा, बचाव के अनुरूप साधन अपनाए। अपने आप को सुरक्षा प्रदान की और आप प्रकृति के उस भयंकर विभीषिका से सुरक्षित बाहर निकल गए। जिस प्रकार इस ब्रह्मांड में जगत के संचालक ईश्वर हैं और उनकी क्रियाशक्ति प्रकृति है, उसी प्रकार 'यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे...' उसी प्रकार आपके देह में भी ईश्वर का निवास है, प्रकृति का निवास है। इस प्रकृति के निवास के कारण ही आपमें बल, बुद्धि, शौर्य, ज्ञान, विवेक इत्यादि गुण हैं।

मनुष्य में प्रकृति अपने सीधे रूप में कार्य नहीं करती है। यह प्रकृति मनुष्य में प्रवृत्ति (भाव) रूप में परिणत होती है और उन प्रवृत्तियों के आधार पर मनुष्य अपना कार्य करता है। शास्त्र कहते हैं कि प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर जाया जाए, लेकिन हर एक के लिए यह संभव नहीं होता है। वह अपनी प्रवृत्तियों का दास हो जाता है और प्रवृतियां उसे संसार में नचाती हैं। सबसे बड़ी बात है यह है कि सब मनुष्य, स्त्रियों की प्रकृति तो एक समान है, इसीलिए तो हम संसार में क्रियाशील हैं।

बल, बुद्धि, विवेक, शौर्य, धैर्य, सहनशीलता, कर्तव्य पालन यह सारे गुण, जो प्रकृति के स्वरूप हैं, सब मनुष्य में विद्यमान है। लेकिन, सोचो! यदि कोई अपने प्रकृति प्राप्त बल को क्रोध की प्रवृत्ति में बदल देता है तो उसका जीवन कैसा होगा? यदि कोई व्यक्ति अपने अर्थ की प्रकृति को लोभ की प्रवृत्ति में बदल देता है तो उसका जीवन कैसा हो जाएगा? यदि कोई अपनी वाणी की प्रकृति को अपशब्द बोलने की प्रवृत्ति में परिवर्तित कर देता है तो उसका जीवन कैसा होगा? विशेष बात यह है कि सबकी प्रकृति एक है, लेकिन सबकी प्रवृत्तियां (भाव) अलग-अलग क्यों है? इस प्रश्न पर सबको विचार करना है।

प्रवृत्तियों से ही निर्माण और विनाश

मनुष्य केवल अपनी प्रकृति के आधार पर जीवन में उन्नति, अवनति प्राप्त नहीं करता, वह अपनी प्रवृत्तियों के आधार पर जीवन का निर्माण या विनाश करता है।

रावण में हजारों गुण थे, लेकिन उसने अपने बल, बुद्धि, साहस, ज्ञान की प्रकृति को अभिमान, अधिकार और लोभ की प्रवृत्ति में बदल दिया तो उसके प्रकृतिजन्य सारे गुण दुष्ट प्रवृत्तियों में परिणत हो गए और उसका नाश हुआ। यही बात प्रत्येक मनुष्य पर लागू होती है, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य ईश्वर का लघु अंश है और जिस प्रकार ईश्वर पूर्ण हैं, उसी प्रकार मनुष्य भी पूर्ण है। इसीलिए यह वेद वाक्य बना है-

ऊँ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते,
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवाव शिष्यते।।

आपकी प्रकृति बहुत सुंदर है, श्रेष्ठ है, सर्वगुण संपन्न है, लेकिन प्रकृति चाहती है कि आप उन प्राकृतिक गुणों से अपने जीवन का स्वयं निर्माण करें या विनाश करें, यह आपके हाथ में है। इसीलिए एक प्रार्थना में आया है-

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती,
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम्।।

जिस प्रकार प्रकृति में पहाड़, जंगल, झरने, समुद्र, नदियां हैं, उन्हें मनुष्य स्वयं तो निर्माण नहीं कर सकता। आप अपने लिए एक नए हिमालय का निर्माण तो नहीं कर सकते, लेकिन अपनी प्रकृति को शुद्ध प्रवृत्तियों में परिवर्तित कर उस हिमालय पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं।

निर्णय-क्षमता का विकास जरूरी

जीवन का सबसे बड़ा खेल अपनी प्रकृति को अपनी श्रेष्ठ प्रवृत्तियों (भावों) की दिशा में परिवर्तित करना है। इसी को कर्म कहा गया है, इसी को साधना कहा गया है, इसी को तपस्या कहा गया है। सदा ही विचार रखें, याद रखें। बुद्धि, ज्ञान, विवेक, शौर्य, बल, पराक्रम विशुद्ध प्रकृतिजन्य भाव है। इन भावों को किस दिशा में मोड़ना है और इसके लिए किस प्रकार से क्रियाशील होना है, यह आपके विवेक पर निर्भर करता है। यदि आपने अपने जीवन में सही समय पर निर्णय नहीं लिए, तो जीवन यात्रा में पछतावा ही रहेगा। तो सबसे पहले आपको अपनी निर्णय क्षमता का विकास करना है और इन निर्णयों का लक्ष्य आपके जीवन में मधुरता और आनन्द प्राप्ति के लिए होना चाहिए। इन निर्णयों में घृणा, द्वेष, तुलना के लिए कोई स्थान नहीं है। घृणा, द्वेष और हर समय तुलनात्मक प्रवृत्ति आपकी श्रेष्ठ प्रकृति को भी गलत दिशा में गतिशील कर देती है।

नित्य प्रति अपनी प्रवृत्तियों का विश्लेषण करते रहें और यदि आपकी प्रवृत्ति क्रोध, वैर, लोभ, हिंसा, चोरी, घृणा, द्वेष की दिशा में मुड़ रही है, तो उसे तत्काल रोकें। अरे भाई! जीवन बहुत छोटा है और जीवन बहुत लम्बा भी है। आप यह विचार करें कि मेरे लिए प्रत्येक दिन नया है और मुझे आनन्द, अमृत के साथ इसे जीना है। तो अपनी प्रकृति को, अपनी शक्ति को श्रेष्ठ प्रवृत्तियों की ओर ले जाएं। तब धीरे-धीरे जीवन में निवृत्ति की स्थिति आएगी, जिसे भगवान श्रीकष्ण ने स्थितिप्रज्ञ की संज्ञा दी है।

आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते...

श्रावण में करें शिव-शक्ति अभिषेक

अपनी प्रकृति को श्रेष्ठ प्रवृत्ति में परिवर्तित करें, आपका ईश्वर, आपका गुरु हर समय आपको आशीर्वाद के लिए तत्पर हैं। बस, प्रवृत्तियों के जंजाल में ना उलझें और अपनी विशुद्ध प्रकृति को समझें और उसी के अनुसार निरन्तर कार्यरत रहें। अपनी प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को प्राप्त करने के लिए श्रावण मास में शिव और प्रकृति रूपी शक्ति का अभिषेक अवश्य संपन्न करें।

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

लापरवाही कहीं किरकिरा न कर दे बरसात का मजा

बरसात में रहें हेल्दी

ग्रीष्म की तपन के बाद बारिश की रिमझिम फुहारें भला किसे सम्मोहित नहीं करतीं! भींगे-भींगे मौसम के साथ मन करता है हम भी इन फुहारों के संग खूब भींगें और मौसम का भरपूर मजा लें, लेकिन इस मौसम

में आहार-विहार संबंधी जरा भी लापरवाही बारिश का मजा किरकिरा करने के लिए काफी है। इन दिनों सबसे अधिक स्वास्थ्य संबंधी तकलीफें गलत खान-पान के कारण होती है। यदि थोड़ी सावधानी बरती जाय तो बीमारियों से तो बचे ही रहेंगे, साथ ही बारिश का मजा दोगुने उत्साह के साथ ले सकेंगे।

पानी : बारिश में स्वास्थ्य रक्षा के उपाय बरसात में सबसे पहले ध्यान दें पीने के पानी पर। इस मौसम में जलजनित अनेक संक्रामक रोग तेजी से फैलते हैं। इनसे बचने के लिए वाटर फिल्टर का इस्तेमाल करें या पानी को उबालकर ठंडा करके पिएं। बाहर का पानी पीने से बचें।

भोजन : इस मौसम में बासी भोजन, तले-भुने, गरिष्ठ, खट्टे, तेज मिर्च मसालेदार, बैंगन, फूलगोभी एवं ठंडी प्रकृति के खाद्य पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए। ताजी रोटी, छिलके वाली मूंग की दाल, लौकी, गिलकी, परवल आदि सुपाच्य भोज्य पदार्थों का सेवन करना हितकर होता है।

हरी पत्तीदार सब्जी : हरी पत्तीदार भाजियों का सेवन न करें। इस मौसम में इनमें कीटाणु मौजूद होते हैं, जो पेट की बीमारी पैदा कर सकते हैं।

फल-भुट्टे : इस मौसम में मीठे आम, जामुन, भुट्टे व मौसमी ताजे फलों को अपने आहार में अवश्य शामिल करें। अधिक पका हुआ फल या गली सब्जियां खाने से बचें। बाजार के दही या दही की लस्सी का सेवन न करें।

गीले कपड़े : बरसात के दिनों में गीले कपड़े पहनने से त्वचा संबंधी रोग हो सकते हैं, इसलिए गीले कपड़े पहनकर न रहें। यदि भीग जाते हैं तो तुरंत बदन को पूरी तरह सुखाकर ही कपड़े पहनें।

बारिश का पानी : घर के आसपास बारिश का पानी जमा न होने दें। कूलर से भी पानी निकालकर साफ कर लें। यदि आसपास गड्ढों में पानी जमा हो रहा है तो मिट्टी का तेल डाल दें, इससे मच्छर पनप नहीं पाएंगे। सोते समय मच्छरदानी का प्रयोग करें।

मालिश : इन दिनों शरीर पर जैतून या नारियल के तेल की मालिश करके स्नान करें। घर के बाहर निकलें तो छतरी व रेनकोट साथ लेकर चलें।

धनपत राय ऐसे बन गए मुंशी प्रेमचंद

रामबाबू नीरव
वरिष्ठ साहित्यकार
पुपरी, सीतामढ़ी (बिहार)।

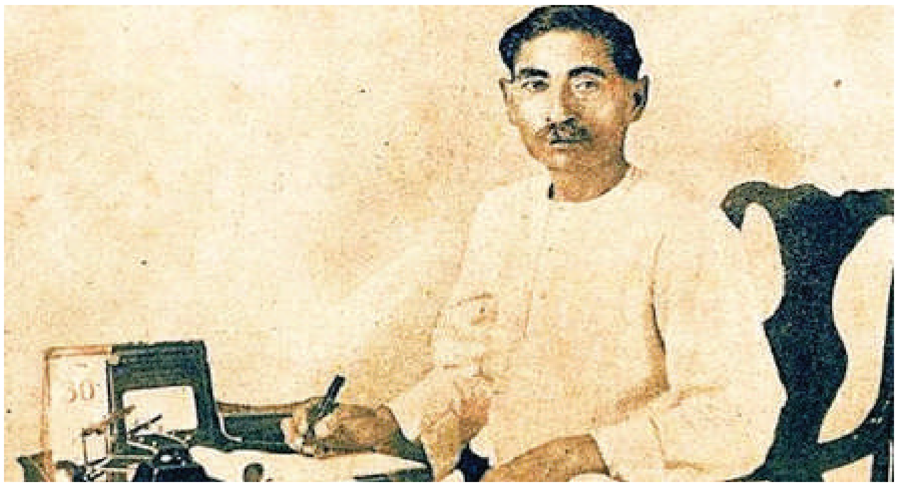

अनछुए प्रसंग... 31 जुलाई : जयंती पर विशेष

इस आलेख में मैं सर्वप्रथम उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद के नामों से जुड़ी हुई घटनाओं पर प्रकाश डालना चाहूंगा। 31 जुलाई 1880 को जन्मे मुंशी प्रेमचंद का मूल नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। चूंकि इन्होंने अपनी आरंभिक शिक्षा उर्दू भाषा में प्राप्त की थी, इसलिए आरंभ में नबाब राय के नाम से उर्दू में छोटी छोटी कहानियाँ लिखा करते थे। फिर उन्होंने इसी नाम से उर्दू लिपि में कई उपन्यास भी लिखे। उर्दू में लिखी गयी उन कहानियों तथा उपन्यासों में प्रमुख थे हज-ए-अकबर, जिहाद, राह-ए-नजात, हमखुर्मा व हमसवाव, असरारे मआबिद आदि। 1908 में देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत उर्दू में उनका एक कहानी संग्रह नबाब राय के नाम से प्रकाशित हुई। संग्रह का नाम था 'सोजे वतन'। इस कहानी संग्रह में राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत अनेक कहानियां थीं। दुर्भाग्य से उनके इस कहानी संग्रह पर ब्रिटिश हुकूमत की नजर पड़ गयी और न सिर्फ इस कहानी संग्रह की सभी प्रतियां जब्त कर ली गईं, बल्कि निरंकुश अंग्रेजी सरकार द्वारा इस तरह की वतन-परस्ती वाली किताबें न लिखने की हिदायत दे दी गयी। एक तरह से उनके लेखन को ही बैन कर दिया गया, मगर उनका साहित्यकार मन भला कब मानने वाला था। अपने मन की भावना को व्यक्त करने के लिए वह छटपटाने लगे। उनके एक मित्र दयाराम निगम ने उन्हें नाम बदल कर साहित्य लेखन की सलाह दी और उन्होंने ही उनका नाम रखा प्रेमचंद।

जिस समय वह 'सरस्वती' का संपादन कर रहे थे, उस समय 'सरस्वती' के एक और सम्पादक थे, जिनका नाम कन्हैया लाल मुंशी था। एकबार 'सरस्वती' में गलती से प्रेमचंद जी के नाम के पहले मुंशी छप गया, तब से ही वे मुंशी प्रेमचंद के नाम से विख्यात हो गये। प्रेमचंद नाम से उनकी पहली कहानी 'बड़े घर की बेटी' थी, जो जमाना मासिक के दिसम्बर 1910 के अंक में प्रकाशित हुई थी। लगभग उसी समय कवयित्री महादेवी वर्मा के सम्पादन में निकलने वाली मासिक पत्रिका 'चांद' में उनका उपन्यास 'निर्मला' धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ। निर्मला दहेज प्रथा, अनमेल विवाह तथा नारी उत्पीड़न की सशक्त अभिव्यक्ति है। 'सरस्वती' में प्रथम बार उनकी कहानी 'सौत' 1915 में प्रकाशित हुई थी। उनका प्रथम हिन्दी उपन्यास 'सेवासदन' 1918 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास को उन्होंने पहले उर्दू में 'बाजारे हुस्न' के नाम से लिखा, परंतु इसका प्रकाशन पहले हिन्दी में सेवासदन के नाम से हुआ, बाद में उर्दू में 'बाजारे हुस्न' के नाम से हुआ। उनका अंतिम उपन्यास 'गोदान' 1936 में प्रकाशित हुआ। उन्होंने सरस्वती के साथ साथ मर्यादा तथा माधुरी नाम की पत्रिकाओं का भी सम्पादन किया था। उनकी कहानियों तथा उपन्यासों को जनसरोकारों से जुड़े भाव को देखते हुए बंगाल के सुप्रसिद्ध साहित्यकार शरद् चन्द्र चट्टोपाध्याय ने उन्हें 'कथा सम्राट' की उपाधि से विभूषित किया, वहीं उनके पुत्र अमृत राय ने उन्हें 'कलम का सिपाही' मानकर उनकी जीवनी लिखी।

प्रेमचंद की कृतियों में सामाजिक और आर्थिक विषमताओं के साथ साथ विसंगतियों पर प्रहार को भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इसके साथ ही इनकी रचनाओं में ग्रामीण समाज की कुरीतियों, सामंती व्यवस्था की क्रूरता के साथ साथ जातिवाद पर कुठाराघात को भी शिद्दत से महसूस किया जा सकता है। स्त्रियों की त्रासदी, दहेज प्रथा तथा बेमेल विवाह जैसी प्रथा पर भी इन्होंने अपनी कृतियों में बेबाकी से प्रहार किया है। आंचलिकता का पुट लिए इनकी कहानियों में प्रमुख है - कफन, पूस की रात, ईदगाह, सबा सेर गेहूं, पंचपरमेश्वर, ठाकुर का कुंआ, दो बैलों की कहानी, नमक का दरोगा तथा नरक का मार्ग आदि। उनकी लगभग साढ़े तीन सौ कहानियों में से सर्वश्रेष्ठ कहानी का चुनाव कर पाना असंभव है। उसी तरह उनके उपन्यासों में से भी सर्वश्रेष्ठ का चुनाव करना नामुमकिन है। सेवा सदन, निर्मला, गबन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि से लेकर गोदान तक में दलितों और शोषितों के दर्द को तथा नारी उत्पीड़न को जिस बारीकी के साथ इन्होंने उभारा है वह उनके समकालीन बहुत कम लेखकों में देखने को मिलता है।

कहानियों तथा उपन्यासों के अतिरिक्त उन्होंने मुंबई में दो वर्षों तक रहकर फिल्मों की पटकथा लेखन का भी काम किया था। इनकी एक फिल्म थी मजदूर। इस फिल्म में मिल मालिक और मजदूर यानि बुर्जुआ और सर्वहारा के बीच संघर्ष, मजदूरों का शोषण जैसी सामंती क्रूरता को निर्भीकता पूर्वक दर्शाया गया था। परिणाम यह हुआ कि इस फिल्म को पूंजीपतियों की पोषक ब्रिटिश हुकूमत द्वारा प्रतिबंधित कर दिया गया। इस फिल्म के निर्माता थे मोहन भवनानी तथा निर्देशक थे के. सुब्रमण्यम। फिल्म को प्रतिबंधित कर दिए जाने से उनकी भावना आहत हो गयी और प्रदूषित फिल्मी दुनिया को छोड़कर वे अपने गाँव आ गये और पुनः स्वतंत्र लेखन में जुट गये। वे आदर्शवादी के साथ साथ यथार्थवादी साहित्यकार थे। गाँधीवादी विचारधारा के साथ साथ मार्क्सवादी (वामपंथी) विचारधारा को भी सहजता से अनुभव किया जा सकता है। उनका आदर्श मात्र लेखन में ही नहीं था, बल्कि अपने वास्तविक जीवन में भी वे आदर्शवादी थे, जिसका ज्वलंत उदाहरण है एक विधवा (शिव रानी देवी) से उनका विवाह करना।

इनकी कृतियों की सबसे बड़ी विशेषता है सहजता और सरलता। उद्‌भट विद्वानों से लेकर सुदूर ग्रामीण अंचल का मजदूर और किसान भी इनकी कृतियों को चाव से पढ़ते हैं, इसलिए ही ये जन लेखकों की अग्रिम पंक्ति में शुमार किये जाते हैं।

ग्रामीण युवाओं का कौशल निखारेगा डालमिया भारत फाउंडेशन

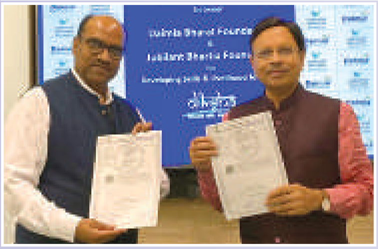

संवाददाता

बोकारो : डालमिया भारत फाउंडेशन (डीबीएफ) ने क्विक सर्विस रेस्तरां (क्यूएसआर) परिचालन में ग्रामीण युवाओं को प्रशिक्षित करने के लिए जुबिलेंट भरतिया फाउंडेशन के साथ साझेदारी की है। डीबीएफ सीमेंट और चीनी बनाने वाली एक प्रमुख कंपनी डालमिया भारत लिमिटेड (डीबीएल) की सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) शाखा है, वहीं, जुबिलेंट भरतिया फाउंडेशन खाद्य सेवा, औषधि, जीवन विज्ञान जैसे विविध क्षेत्रों में व्यावसायिक रुचि रखने वाले मशहूर समूह, जुबिलेंट भरतिया ग्रुप की सीएसआर शाखा है। इस साझेदारी को एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) के माध्यम से औपचारिक रूप प्रदान किया गया, इस एमओयू पर हस्ताक्षर किये गये, जिसका उद्देश्य क्यूएसआर उद्योग में रोजगार के अवसर मुहैया करना और स्थायी आजीविका को सक्षम बनाना है। भारत में क्यूएसआर उद्योग में काफी वृद्धि देखी जा रही है और खाद्य सेवा व्यवसायों के लिए एक विकसित बाजार तथा अनेक अवसर उपलब्ध हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरे भारत में 18 स्थानों में स्थित डीबीएफ के दीक्षा केन्द्रों में संचालित किये जाएंगे। इस पहल के अंतर्गत शिक्षार्थियों को ग्राहक तथा क्यूएसआर उद्योग, दोनों की अपेक्षाओं और मानदंडों के प्रति संवेदनशील बनाया जाएगा। डीबीएफ का लक्ष्य वित्त वर्ष 2024 में 3600 प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षित करना है।

समावेशी विकास को बढ़ावा देना हमारी प्राथमिकता : सीईओ

इस पहल के विषय में डालमिया भारत फाउंडेशन के सीईओ, अशोक के. गुप्ता ने कहा कि डालमिया भारत फाउंडेशन में हम समावेशी विकास को बढ़ावा देने तथा हमारी सेवा पाने वाले समुदाय में सकारात्मक प्रभाव पैदा करने के लिए समर्पित हैं। जुबिलेंट भरतिया फाउंडेशन के साथ हमारा सहयोग हमारे नजरिये के बिलकुल अनुरूप है, जैसा कि हम कौशल विकास के माध्यम ग्रामीण इलाकों की युवा प्रतिभा को सशक्त बनाने का प्रयास करते हैं। क?यूएसआर उद्योग में वृद्धि और रोजगार के भारी अवसर उपलब्ध हैं और हमारे अखिल-भारतीय दीक्षा केंद्र उनकी क्षमता को सामने लाने के साथ ही सीखने के केंद्र के तौर पर काम करेंगे। जुबिलेंट भरतिया ग्रुप के वाइस प्रेसिडेंट और हेड-सीएसआर विवेक प्रकाश ने कहा कि जुबिलेंट भरतिया फाउंडेशन में हम युवा लोगों (पुरुष और महिला) को कार्यबल में उनकी सफलता के लिए जरूरी कौशल विकसित करने के समान अवसर प्रदान करने के प्रति वचनबद्ध हैं। क्यूएसआर उद्योग कॅरियर शुरू करने के लिए एक शानदार जगह है, और हमारा नया प्रशिक्षण पाठ्यक्रम इस वृद्धिशील उद्योग में नौकरी पाने के लिए युवाओं को आवश्यक कौशल प्रदान करेगा। उल्लेखनीय है कि डालमिया भारत फाउंडेशन पूरे भारत में अपने कारखानों के आस-पास ग्रामीण समुदायों के सामाजिक-आर्थिक उत्थान की दिशा में लगातार काम करता रहा है। फाउंडेशन ने कौशल विकास, किसानों के लिए आधुनिक कृषि पद्धतियों पर प्रशिक्षण, स्वास्थ्य शिविर और क्षेत्र में अन्य विकासात्मक प्रोग्रामों का संचालन किया है।

84 घंटों का मिलेगा क्लासरूम प्रशिक्षण, स्टाइपेंड की सुविधा भी

84 घंटों के क्लासरूम प्रशिक्षण के इस कोर्स में प्रशिक्षुओं को क्यूएसआर उद्योग में आजीविका बनाने के लिए आवश्यक योग्यता से सुसज्जित किया जाएगा। यह विस्तृत पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों को क्विक सर्विस रेस्तरां परिचालन के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलुओं की जानकारी देगा, जिसमें सेवा में उत्कृष्टता पर विशेष जोर दिया जाएगा। इसके अलावा, जुबिलेंट भरतिया फाउंडेशन ऑन द जॉब ट्रेनिंग (ओजेटी) के अवसर प्रदान करेगा, जिसमें प्रशिक्षुओं को स्टाइपेंड भी मिलेगा। ओजेटी को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद प्रशिक्षुओं को क्यूएसआर उद्योग के संगठित क्षेत्र में पूर्णकालिक नौकरी का प्रस्ताव और राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान, नोएडा द्वारा प्रमाण-पत्र दिया जाएगा।

चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल चल
जंगल एक बड़ी मंजूषा
इसमें निशा, इसी में ऊषा
हँसी-रुदन दोनों जीवन में
गीत यही चलता है वन में
सुख और दुःख हैं कूल-किनारे
बहे मध्य में वन के मन की धार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल
चल जंगल चल, चल जंगल चल
खुला खजाना ना कोई पट
झेल रहे जंगल कई संकट
लालच में डूबे व्यापारी
तस्कर, लकड़ी-चोर, शिकारी
क्षति पहुँचाते हैं जंगल को
हम सबको मिलकर करना प्रतिकार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल

(क्रमशः)

कुमार मनीष अरविन्द

बस एक क्लिक पर अब देख सकेंगे साढ़े छह लाख से अधिक गांवों की सांस्कृतिक छटा

'मेरा गांव, मेरी धरोहर' वर्चुअल टूर पोर्टल का शुभारंभ

रोज रात 8.15 बजे से मुफ्त देख सकेंगे प्रोजेक्शन शो

इस अवसर पर प्रोजेक्शन मैपिंग शो का प्रीमियर हुआ, जिसमें देशभर के गांवों की मनोरम कहानियों के माध्यम से भारत की समृद्ध विरासत और संस्कृति का प्रदर्शन किया गया। यह शो अब रोजाना रात 8:15 बजे दर्शकों के मनोरंजन के लिए खुलेगा और निःशुल्क होगा। इस प्रोजेक्शन मैपिंग शो की सामग्री लगातार विकसित होगी, जिसमें नई और रोमांचक कहानियां शामिल की जाएंगी। इसके अतिरिक्त, दर्शक mgmd.gov.in/show पोर्टल के माध्यम से इस शो के लिए सिंक्रोनाइज्ड ऑडियो तक पहुंच सकेंगे, जिससे लोगों के लिए छतों और बालकनियों जैसे आस-पास के स्थानों से इसे देखना सुविधाजनक हो जाएगा। इस अवसर पर संस्कृति सचिव गोविंद मोहन और आईजीएनसीए के सदस्य सचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी भी उपस्थित थे। यह कार्यक्रम आगंतुकों के लिए एक दृश्य एवं संवेदी अनुभव प्रदान करने वाला साबित हुआ, जिससे उन्हें भारतीय संस्कृति से संबंधित चित्रपट में पूरी तरह से मग्न होने का मौका मिला।

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : कुतुबमीनार में भव्य शुभारंभ के बाद 'मेरा गांव मेरी धरोहर' का वर्चुअल पोर्टल लाइव कर दिया गया। केन्द्रीय संस्कृति, विधि एवं न्याय और संसदीय कार्य राज्यमंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने नई दिल्ली के कुतुबमीनार परिसर में 'मेरा गांव मेरी धरोहर' के वर्चुअल पोर्टल का शुभारंभ किया। इस अवसर पर संस्कृति एवं विदेश मंत्री राज्य मंत्री श्रीमती मीनाक्षी लेखी, ग्रामीण विकास राज्यमंत्री साध्वी निरंजन ज्योति और केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री शोभा करंदलाजे भी उपस्थित थीं। 'मेरा गांव मेरी धरोहर', एक वर्चुअल संग्रहालय है जो भारत के 6.5 लाख से अधिक गांवों का सांस्कृतिक मानचित्रण करता है और इसे कुतुबमीनार में एक भव्य शुभारंभ समारोह के दौरान जनता के लिए लाइव किया गया। इसके शुभारंभ के बाद से, वेबसाइट को लगभग 32,000 विज़िट हासिल हुई हैं। इस अवसर पर श्री मेघवाल ने कहा कि गांवों से संबंधित सूचनाओं को एकीकृत करने के उद्देश्य से इस वर्चुअल प्लेटफॉर्म का शुभारंभ भारत की सांस्कृतिक विरासत और ग्रामीण जीवन को व्यक्त करने का एक बेहद ही सकारात्मक तरीका है। केन्द्रीय संस्कृति एवं विदेश मंत्री राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी ने कहा कि यह मंच इस बात का एक उत्कृष्ट उदहारण है कि हम कैसे अपनी समृद्ध संस्कृति और गांवों की विरासत को देशभर के लोगों एवं युवाओं तक पहुंचाने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग कर सकते हैं।

केन्द्रीय मंत्रीगण ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया और अपनी कलाकृतियां प्रदर्शित करने वाले कलाकारों, ग्रामीणों एवं कारीगरों से बातचीत की। इस दौरान श्री मेघवाल और मीनाक्षी लेखी ने बायोस्कोप एवं कठपुतली के प्रदर्शन का आनंद लिया। श्रीमती लेखी ने कार्यक्रम स्थल पर इस अवसर का उपयोग कठपुतली कला में अपने कौशल को निखारने में भी किया। इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में देशभर के 70 विभिन्न गांवों का प्रतिनिधित्व करने वाले 1000 से अधिक ग्रामीणों के साथ-साथ दस स्कूलों के 900 से अधिक बच्चों ने उत्साहपूर्वक भागीदारी की। इस जीवंत वातावरण ने भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत तथा पारंपरिक नृत्य एवं संगीत कार्यक्रम की सामूहिक भावना को दर्शाया। आगंतुकों के अनुभव को समृद्ध करने के लिए कई आकर्षक गतिविधियां आयोजित की गईं थीं। सेंसर-आधारित प्रौद्योगिकी के एकीकरण के साथ, सभी आगंतुक एक 'साइकिल मैराथन' में शामिल हुए। यह मैराथन में उन्हें कई गांवों से होते हुए एक आभासी यात्रा पर ले गया और उनके सामने ग्रामीण जीवन से संबंधित एक अनूठा दृष्टिकोण पेश किया। इसके साथ ही इस कार्यक्रम में एक 'डिजिटल विलेज ट्रिविया' और संवादात्मक पहेली वाला गेम भी शामिल था।

आईआईए कपूरथला के अध्यक्ष बने प्रो. नागेंद्र

नई दिल्ली : विश्व मगही परिषद, नई दिल्ली के अन्तरराष्ट्रीय महासचिव आर्किटेक्ट प्रो नागेंद्र नारायण को इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स, कपूरथला-होशियारपुर उप-केंद्र के अध्यक्ष के रूप में चुना गया। मगध के जाने-माने साहित्यकार रामरतन सिंह रत्नाकर, नरेंद्र प्रसाद सिंह, राज कुमार प्रसाद, लालमणि विक्रांत, समस्त मगहिया समाज व विश्व मगही परिषद के अनेक सदस्यों ने प्रो नागेंद्र नारायण की जीत पर प्रसन्ता व्यक्त करते हुए भविष्य में सफलता की कामना की है। आर्किटेक्ट प्रोफेसर नारायण वर्तमान में लवली स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर एंड डिजाइन (एलएसएडी) के आर्किटेक्चर विभाग के प्रमुख और कार्ड-एडीएपीटी इंडिया के संस्थापक प्रिंसिपल आर्किटेक्ट हैं। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स का चुनाव तीन पर्यवेक्षकों की देखरेख में हुआ, जिन्हें आईआईए मुंबई मुख्यालय द्वारा नियुक्त किया गया था। अब, आईआईए कपूरथला-होशियारपुर उप-केंद्र के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों और कार्यकारी समिति में अध्यक्ष प्रोफेसर नागेंद्र नारायण शामिल हैं। उपाध्यक्ष प्रो. रघु रमन, कोषाध्यक्ष आसना अरोड़ा, संयुक्त सचिव भूपिंदर सिंह और कार्यकारी सदस्य त्रिलोक कुबड़े, मनिंदरजीत सिंह, जसविंदर सिंह परमार, गौरव जोत सिंह एवं रितुपर्णा. जबकि दो सहयोजित सदस्य इशिता गर्ग और राधिका गोपीनाथ भी चुनी गईं हैं। आईआईए कपूरथला-होशियारपुर उप-केंद्र की कार्यकारी समिति में कई विशेष आमंत्रित सदस्य और विभिन्न समितियों के संयोजक भी शामिल होंगे। नवनिर्वाचित सदस्यों ने उप-केंद्र के प्रधान कार्यालय में आयोजित उप-केंद्र की पहली सामान्य निकाय बैठक में शपथ ली।

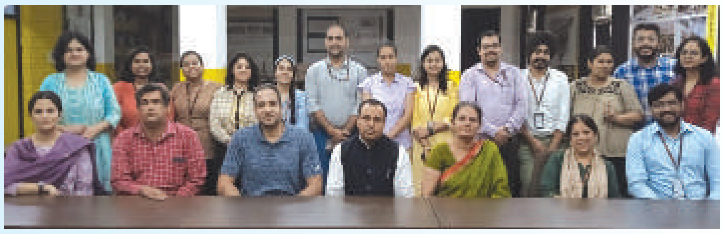

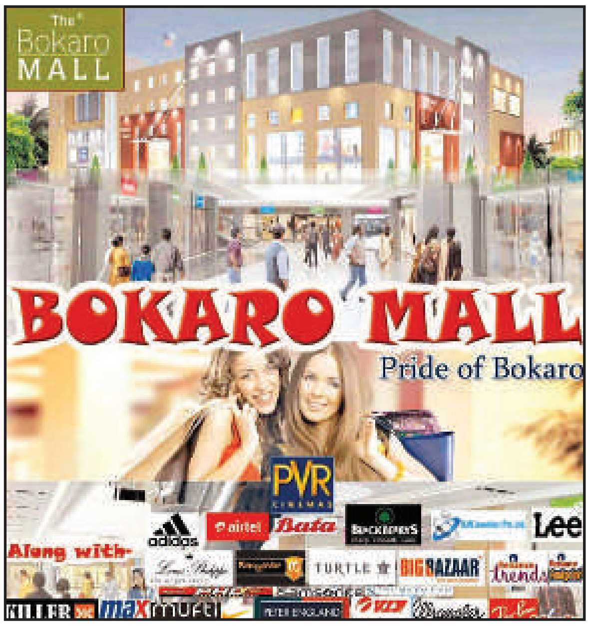

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा डीबी कॉर्प लिमिटेड, भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, गोविन्दपुर रोड, जीके आश्रम, धनबाद से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **श्रवण कुमार झा,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई. पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)